आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628
ISSN 2455-6033

मीरायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका (इण्डियन लैंग्वेजेज, क्र.सं. 62)

वर्ष-14, अंक-03 (पूर्णांक-55) सितम्बर-नवम्बर, 2020

सहयोग राशि

वार्षिक
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया
संस्थागत : 400.00 रुपया
आजीवन (दस वर्षीय)
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया
संस्थागत : 4000.00 रुपया
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के पक्ष में नकद/मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवाई जा सकती है।

संस्थापक सम्पादक
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

सम्पादक
सत्यनारायण समदानी

कार्यालय एवं सम्पर्क-सूत्र
मीरा स्मृति संस्थान
मकान नं. 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी, पार्श्वनाथ गार्डन के पीछे, सेंती, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)
मो. 094141-48537
मो. 095156-79037
ई-मेल :
samdanisatya@gmail.com

मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1.	खाता का नाम	मीरा स्मृति संस्थान (MEERA SMRITI SANSTHAN)
2.	खाता संख्या	बचत खाता 51042428405
3.	बैंक शाखा	भारतीय स्टेट बैंक, कलक्टरेट शाखा चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4.	IFSC	SBIN0031237

प्रकाशन-तिथि
11 दिसम्बर, 2020

Designed by उमेश अजमेरा, श्री हर वान, चित्तौड़गढ़-9829079159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवाद चित्तौड़गढ़ न्यायाधिकरण क्षेत्र के अधीन होंगे।

अनुक्रम

क्र.सं.		आलेख/रचना	पृष्ठ
1.		मीरा-पद	05
	1.	सन्त मीराबाई (1) गोविंदा सूं प्रीत ...... (2) गोहनां गोपाल........	
2.		मीरा-प्रशस्ति	06
	2.	आचार्य रामेश्वर प्रसाद गुप्त, दतिया (मध्यप्रदेश) मीरा की दरद न जानें कोय	
3.		सम्पादकीय	07–10
	3.	सत्यनारायण समदानी, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पूर्ण स्वराज्य की संकल्पना : अपना देश-अपनी भाषा	
4.		मीरा-सन्दर्भपक्ष	
	4.	श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, जयपुर (राजस्थान) मीरांबाई के पद	11–12
	5.	श्री सुरेश कुमार जिनागल, वाराणसी (उत्तरप्रदेश) मीराबाई की कविता : लोक का सामूहिक अवचेतन	13–22
5.		सन्त-भक्त/भक्ति पक्ष	
	6.	डॉ. प्रेमसिंह, जोधपुर (राजस्थान) जांभोजी का दर्शन : अध्यात्म, भक्ति और पर्यावरणीय चिन्तन का सामंजस्य	23–31
	7.	डॉ. बिजेन्द्र कुमार, कैथल (हरियाणा) गुरुनानकदेव और सन्त कबीरदास की वाणी में सामाजिक चिंतन	32–38
	8.	अभिनव अर्चना, मुंगेर (बिहार) आध्यात्मिक सफर और स्त्री : एक ऐतिहासिक अध्ययन	39–51
	9.	डॉ. समीरकुमार पाण्डेय, सुलतानपुर (उत्तरप्रदेश) गुरु गोरखनाथ सिद्धान्त प्रतिपादक ग्रन्थ गोरखविजय नाटक	52–55
	10.	डॉ. शीतांशु, दीफू (असम) वैश्वीकरण के युग में भक्ति परम्परा का बोध	56–60

गुरु नानकदेव और संत कबीरदास की वाणी में सामाजिक चिंतन

- डॉ. बिजेंद्र कुमार

शोध आलेख-सार

हिंदी साहित्य के इतिहास के पूर्व-मध्यकाल में भक्ति-भावना एवं समाज-सुधार को लेकर एक विशेष धारा का जन्म हुआ, जिसे संत काव्यधारा के नाम से जाना जाता है, जिसने अपने समाज कल्याण के उपदेशों द्वारा एक ऐसी निर्मल धारा बहाई, जिस पर चिंतन करने के लिए जन साधारण के साथ, उस समय के शासक भी विवश हो गए। इन संत कवियों में संत गुरु नानकदेव एवं संत कबीरदास जी का नाम सर्वोपरि है, जिन्होंने अपने सामाजिक चिंतन द्वारा समाज में फैले आडंबर, पाखंड, वैषम्य, जातिगत भेदभाव, धार्मिक असहिष्णुता आदि के साथ सामान्य नागरिक, नारी आदि पर हो रहे अत्याचार पर बिना किसी भय के विचार व्यक्त किया और बुराइयों का विरोध किया। उन्होंने पतित हो रही सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों में नए प्राण डालने का प्रयत्न किया। भगवान की पूजा-अर्चना के नाम पर विभाजित जनता को समझाने का प्रयत्न किया कि हम सब एक ईश्वर की संतानें हैं। सभी का शरीर पांच तत्वों के मिश्रण से ही बना है। इसलिए इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें उस परम तत्त्व की संतान, प्रत्येक प्राणी चाहे वह मनुष्य हो या पशु-पक्षी, सभी को सम्मान देने की आवश्यकता है। ऐसा करके हम एक ऐसे समाज का निर्माण करेंगे, जहाँ किसी प्रकार का कोई भय, डर, वैषम्य, द्वेषभाव आदि नहीं होगा, बल्कि समता, समानता, भाईचारा, आपसी-सहयोग, प्यार-प्रेम, मित्रता होगी। ऐसे समाज में सभी सुखमयी एवं आनंदमयी जीवन जीते हुए, एकेश्वर की भक्ति करते हुए, मोक्ष को प्राप्त करेंगे। आज फिर से गुरु नानकदेव एवं कबीरदास जैसे संतों द्वारा सुझाए गए रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। उनके सामाजिक चिंतन को ग्रहण करने की जरूरत है, ताकि मानव समाज में शांति स्थापित की जा सके, जिसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में आज मानवता कहीं दूर पीछे रह गई है।

बीज वाक्य :

सामाजिक चिंतन, गुरु नानकदेव, संत कबीरदास, वाणी, मानव कल्याण, एकेश्वर।

प्रस्तावना -

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही आध्यात्मिक महत्ता का देश रहा है, जहाँ साधु-संतों को विशेष महत्त्व दिया जाता रहा है। यह साधु-संतों का ही प्रताप है कि वे साधारण मानव को परम तत्त्व का चिंतन देकर, मानव के कल्याण के लिए प्रेरित करते रहते हैं, ताकि मानव का प्रत्येक कार्य समाज हित से होते हुए, परमात्मा की प्राप्ति तक पहुँच जाए। हालांकि ये साधु संत, ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी इनकी सूझबूझ, बुद्धि कौशल एवं तत्त्व शोधन क्षमता अद्वितीय थी। मानव कल्याण तथा समाज हितार्थ उन्होंने जो भी कहा वह सब आज भी लोकवाणी अथवा संतवाणी के रूप में जीवित है। आदिकाल में नाथ, सिद्ध, योगियों आदि से होते हुए यह परंपरा भक्तिकाल तक पहुँच गई। इस काल के संतों ने अपनी वाणी के द्वारा केवल अध्यात्म या परमतत्त्व का ही चिंतन नहीं किया, अपितु समाज में फैली बुराइयों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, अत्याचारों, नैतिक पतन, धार्मिक पतन, राजनीतिक द्वेषभाव, जीव हत्या, प्रकृति दोहन आदि के खिलाफ भी आवाज उठाई तथा मानव-मात्र के चितशोधन तथा समाज कल्याण को अपना ध्येय बनाया। कबीर काव्य से एक उदाहरण देखिए -